पाठ 6 प्रेरक प्रसंग

यह भी जानें

- थॉमस एल्वा एडीसन ने बिजली के बल्ब का आविष्कार किया था।
- जगदीश चंद्र बसु ने पौधों में जीवन की खोज की थी।
- दशरथ माँझी को 'माउंटन मैन' के नाम से याद किया जाता है क्योंकि उन्होंने कई वर्षों के प्रयास के उपरांत अकेले दुर्गम पहाड़ को काटकर रास्ता बनाया था।

सोच का अंतर

सुप्रसिद्ध आविष्कारक 'थॉमस एडिसन' जिन्होंने बल्ब का आविष्कार किया था, उन्हें भी उपहास का पात्र बनना पड़ा। अनगिनत प्रयास के उपरांत भी जब वह बल्ब नहीं बना सके, तो लोगों ने उनका उपहास उड़ाते हुए कहा कि तुम 200 बार कोशिश करने के बाद भी सफल नहीं हो सके।

तब एडिसन ने जवाब दिया कि, "मैं 200 बार असफल नहीं हुआ हूँ, बल्कि मैं 200 ऐसे तरीके जानता हूँ, जिनसे बल्ब नहीं बनाया जा सकता।"

यही सोच का अंतर है। अत: हमें सकारात्मक सोच के साथ तब तक प्रयास करते रहना चाहिए, जब तक लक्ष्य सिद्ध न हो जाए।

Scanned by CamScanner

आत्मविश्वास की ताकत

वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु ने यह खोज की थी कि पेड़-पौधों में जीवन होता है। वे भी हम मनुष्यों, पशु-पक्षियों की तरह दुःख-दर्द को महसूस कर सकते हैं। यदि पौधों को जहर दे दिया जाए, तो वे भी मर जाते हैं। अपनी इस खोज को साबित करने के लिए इंग्लैंड में उन्होंने एक सभा बुलाई। सभा के समक्ष इंजेक्शन में जहर भरा और एक पौधे में लगा दिया, पर पौधा मरा नहीं। वहाँ एकत्रित सभा सदस्य उनकी हँसी उड़ाने लगे। लेकिन बसु हताश नहीं हुए। उन्हें अपनी खोज और उससे भी ज़्यादा स्वयं पर पूरा विश्वास था। उनके मन में ख्याल आया कि जब यह पौधा इस जहर से नहीं मर सकता, तो मैं भी इस जहर से कैसे मर सकता हूँ? इस ख्याल के साथ जब वे जहर का इंजेक्शन स्वयं को लगाने लगे, तो आयोजकों में से एक व्यक्ति ने उनका हाथ रोक लिया और कहा- "बसु जी, हमने जहर की जगह इस शीशी में रंगीन पानी भर दिया था।" डॉक्टर बसु ने वह प्रयोग असली जहर से दोबारा किया और पौधा धीरे-धीरे मुरझा गया।

अगर डॉक्टर बसु में आत्मविश्वास नहीं होता, तो वह अपनी खोज को व्यर्थ मान लेते, लेकिन अपने आत्मविश्वास की ताकत से ही उन्होंने पूरी दुनिया को झुका दिया। अगर हम पहले अपने आप पर भरोसा करते हैं, तो दूसरे लोग भी हम पर भरोसा करेंगे और यही हमारी सफलता का पैमाना होगा।

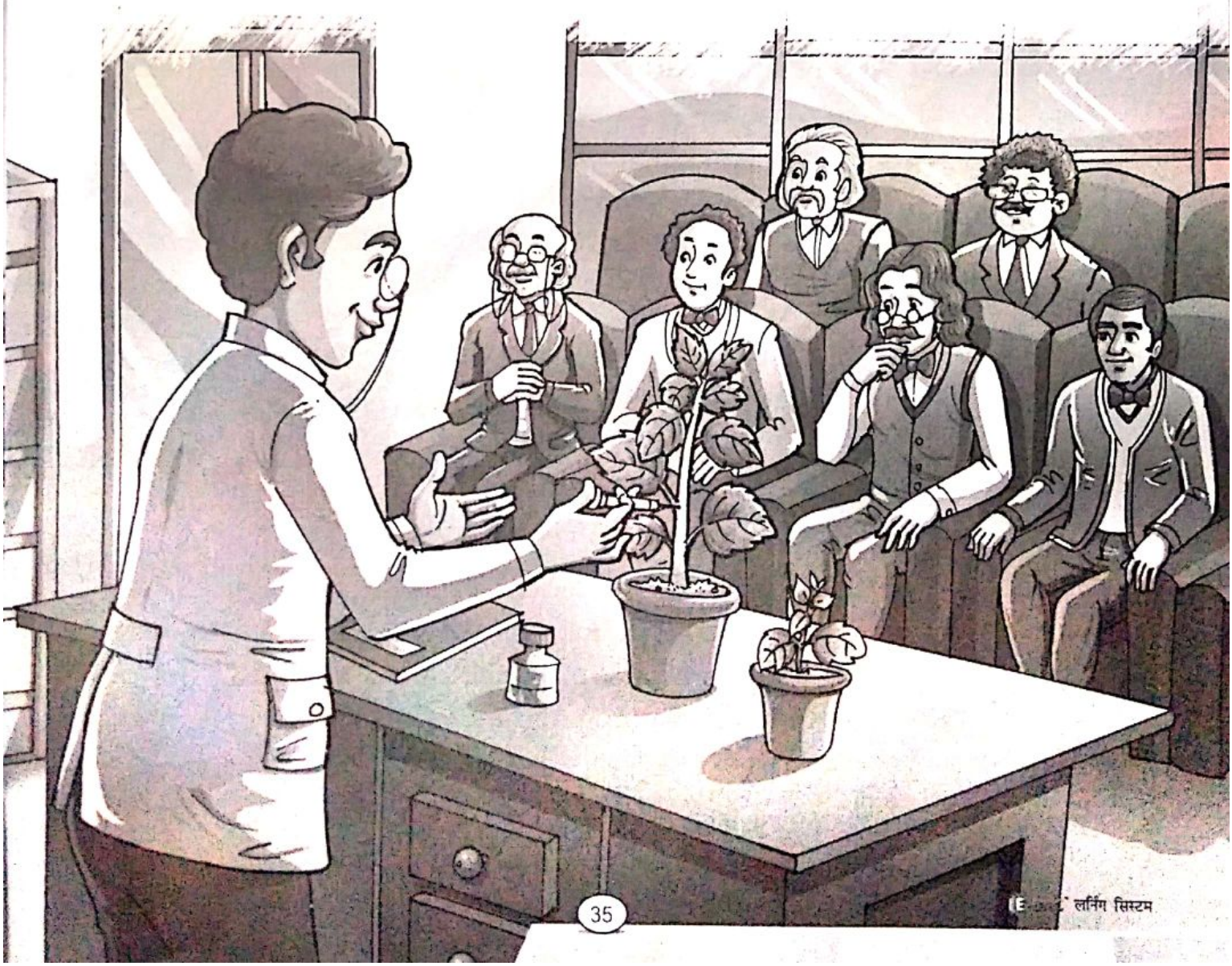

Scanned by CamScanner

जिधर चाह उधर राह

दशरथ माँझी का जन्म एक निर्धन परिवार में हुआ था। अपने घर-परिवार की दैनिक जरूरतों को पूरा करने के इन्हें दिनभर मेहनत करनी पड़ती। इनकी पत्नी प्रतिदिन दुर्गम पहाड़ी पार करती और इनके लिए भोजन-पानी लेकर जाती। एक दिन अचानक इनकी पत्नी का पैर पहाड़ी से फिसल गया। अस्पताल कई किलोमीटर दूर स्थित था। जिसके कारण इनकी पत्नी को सही समय पर चिकित्सा संबंधी सुविधाएँ नहीं मिल सकीं और उनका निधन हो गया। तब माँझी ने ठान लिया कि उस पहाड़ को काटकर रास्ता बनाएँगे, जिस पर से फिसलकर इनकी पत्नी की मृत्यु हो गई।। गाँवभर ने इनका मज़ाक उड़ाया। पर ये अपने लक्ष्य से पीछे नहीं हटे।

माँझी सुबह-सवेरे उठते और हथौड़ा लेकर पहाड़ तोड़ने निकल जाते, घंटों तक ऐसे कठिन परिश्रम करते, जैसे उन्हें अपने इस काम की मज़दूरी मिलती हो। वे न दिन देखते न रात। 22 वर्षों के अथक परिश्रम के बाद उन्हें आखिरकार सफलता मिली। वे पहाड़ का सीना चीरकर रास्ता बनाने में सफल हुए। तब लोगों ने इन्हें माउंटन मैन कहकर पुकारा। उन्होंने सबको कभी हार न मानने, निरंतर कोशिश करने की शिक्षा दी। साथ ही जिधर चाह उधर राह की कहावत को सच साबित कर दिखाया।

Scanned by CamScanner

नए शब्द

उपरांत
बाद में

प्रदर्शन
दिखलाना

अथक

बिना थके

उपहास

मज़ाक

शोध

खोज

पात्र
हकदार

परिश्रम

मेहनत

प्रयास
कोशिश

अनगिनत
कई

अविष्कार
नव-निर्माण

दुर्गम

जहाँ जाना कठिन हो

Scanned by CamScanner